

व्याज का प्लासिकी सिद्धान्त

(The classical theory of interest)

प्लासिकी सिद्धान्त के अनुसार, पूँजी की पूर्ति और माँग के बीच द्वारा व्याज की दर निर्धारित होती है। समग्र अधिमान और पूँजी की पूर्ति समग्र - अधिमान S के द्वारा और पूँजी की माँग पूँजी की प्रत्यक्षित उत्पादकता के द्वारा निर्धारित होता है। समग्र अधिमान और पूँजी की उत्पादकता दोनों ही प्रतीक्षा या बचत पर निर्भर करते हैं। इसलिए इस सिद्धांत को बचत का पूर्ति और माँग सिद्धान्त भी कहते हैं।

पूर्ति पक्ष (Supply side) - पूँजी की पूर्ति बचत पर निर्भर करती है, ना कि समाज की बचत करने की इच्छा और शक्ति पर। कुछ लोग व्याज दर पर ध्यान देकर बिना बचत करते हैं। यदि व्याज की दर शून्य हो, तो भी बचत करते रहेंगे। कुछ ऐसे होते हैं जो इसलिए बचत करते हैं कि व्याज की वर्तमान दर उन्हें बचत की प्रेरणा देने के लिए काफी है। यदि व्याज की दर उस स्तर से गिर जाए, तो वे अपनी बचतों को खर्च देंगे। उनके अतिरिक्त कुछ ऐसे संभावित बचत करने वाले भी होते हैं जो व्याज की दर बढ़ जाने पर बचत करने को प्रेरित होंगे। अंतिम दो श्रेणियों के बचत करने वालों को कुर्बानी, उपभोग स्थगन, या प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जबकि वे व्याज प्राप्त करने के लिए वर्तमान उपभोग से वंचित रहते हैं। व्याज की दर जितनी अधिक होगी, समाज की बचतें भी उतनी ही अधिक होंगी और निधिओं की पूर्ति बढ़ जाएगी। इस प्रकार पूँजी का पूर्ति वक्र ऊपर की ओर ढाल का होता है।

दर का निर्धारण (Rate Determination) - आद्य का स्तर दिया हुआ मान लेते पर, पूँजी के माँग और पूर्ति वक्रों के परस्पर काटने से व्याज की दर निर्धारित होती है। इसे चित्र 2 में दिखाया गया है। d और s वक्र E बिन्दु पर आपस में काटते हैं जो संतुलन बिन्दु है, जबकि व्याज की OR दर पर पूँजी की OQ मात्रा की माँग और पूर्ति होती है। यदि कभी व्याज की दर OR से बढ़कर OR_1 हो जाए, तो निवेश निधियों के लिए माँग गिर जाएगी और निधियों की पूर्ति बढ़ जाएगी। क्योंकि माँग की अपेक्षा पूँजी की पूर्ति अधिक है $R_1S > R_1d$ इसलिये व्याज की दर गिर कर संतुलन स्तर OR पर आ-जामनी जाएगी। यदि व्याज की दर गिर कर OR_2 पर जाए, तो स्थिति इसके विपरीत होगी। पूर्ति की अपेक्षा पूँजी के लिए माँग अधिक है $(R_2d_1 > R_2s_1)$ और व्याज दर बढ़कर OR हो जाएगी। अंतिम स्थिति वह होगी, जहाँ व्याज की संतुलित दर के द्वारा बचत और निवेश में समानता लाई जाती है। यदि किसी समय बचत OQ से बढ़ जाती है, तो व्याज की दर OR के नीचे चली जाएगी क्योंकि पूँजी के लिए माँग उतनी ही रहती है। उसे चित्र में s वक्र के नीचे एक पूर्ति वक्र s_1 द्वारा दिखाया गया है जो d वक्र को d_1 पर काटता है तथा व्याज दर गिरकर OR_2 हो जाती है। व्याज की नीची दर पर लोग कम बचत करेंगे, परंतु निर्योज्य निधियों के लिए माँग बढ़ जाएगी जो व्याज की दर को बढ़ाकर संतुलन स्तर OR पर ले जाएगी।

